सामाजिक कार्यकर्ता के गुण

अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ दासबोध में समर्थ गुरू रामदास ने अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता के गुणों की भी विस्तार से चर्चा की है। पूरे भारत की तीर्थ-यात्रा के समय उन्होंने स्थान-स्थान पर मठों की स्थापना की। ये मठ राष्ट्र-जागरण के केन्द्र थे। इन्हीं के माध्यम से पूरे देश और विशेषकर महाराष्ट्र में जन-जागरण का दुष्कर कार्य सम्भव हुआ। किसी एक स्थान पर 'मठ' स्थापित कर देने के बाद दूसरे स्थान पर जाने के पहले वे उस मठ में किसी योग्य महन्त की नियुक्ति करते थे। महन्त का मुख्य काम लोक-संग्रह तथा लोक-संस्कार का होता था। अर्थात मठ के लिये चिह्नित क्षेत्र से क्षमतावान युनकों को इकट्ठा करना तथा उनमें राष्ट्रीयता के संस्कार उत्पन्न करना। ये नहन्त कैसे होने चाहिये इसका विवेचन उन्होंने दासबोध के ११ वें खण्ड में समास (अध्याय) ६ और १० में किया है। किसी भी श्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता में वैसे गुण होने ही चाहिये जो समर्थ गुरु ने 'महन्त' के लिये आवश्य बताये गये हैं। दास बोध में कहा गया है-

एक ही स्थान पर टिके नहीं रहें

येके ठाई बैसोन राहिला। तरी मग व्यापचि बुडाला।
सावधपणें ज्यादा त्याला। भेटि द्यावीश्रु
याकारणें ुख्य मुख्य। त्यासीं करावें सख्य।
येणे करितां असंख्य। बाजारी मिलतीश्रु

जो एक ही स्थान पर टिका रहता है, उसका सारा कार्य व्यापार ही समाप्त होता है। उसे सतर्क रहकर एक-एक से मिलना होगा। अपनी कार्यसिद्धि के लिये उसे प्रमुखों से मिलना होगा। उनसे स्नेह सम्बन्ध बनाने होंगे। इससे पुलिस सहित हजारों अनुयायी उसके कार्य में रस लेने लगेंगे।

समर्थ रामदास ने उक्त दो ओवियों में बताया है कि एक ही स्तान पर टिके रहने से लोक-संग्रह नहीं हो सकता। इसलिये कार्यकर्ता को नये-नये स्थानों पर जाना चाहिये। जहाँ भी कार्यकर्ता जाये वहाँ समझ-बझ के साथ सम्पर्क करना होगा। उस स्थान पर जो भी छोटे मोटे समूह हैं, उनके मुखिया से उस कार्यकर्ता को मिलना चाहिये। मुखिया जो काम करता है, उसकी जानकारी भी लेनी चाहिये तथा अपने काम की जानकारी भी उसे देनी चाहिये। यह सब करते हुए धीरे-धीरे मुखिया के साथ-साथ उसके अनुयायी भी अपने कार्य से जुड़ जायेंगे।

समुचित जानकारी

ठाई शोध ध्यावा। मग ग्रामीं प्रवेश करावा।
प्राणीमात्र बोलवावा। आप्त पणें॥
दुर्जन प्राणी समजावे। परी ते प्रकट न करावे।
सज्जनापरीस आठवावे। महत्व दे उनी॥

ये दो ओवी भी लोक-संग्रह से ही सम्बन्धित हैं। इनमें बताया गया है कि नये स्थान पर जाने के पहले उस स्थान की पूरी जानकारी कर लेनी चाहिये। वहाँ जाने के बाद वहाँ के लोगों के सामने वह जानकारी प्रकट नहीं करनी चाहिये, बल्कि सभी को सम्मान देते हुए व्यवहार करना चाहिये। यदि कोई व्यक्ति दुष्ट है तो उसकी दुष्टता को समझ लेना चाहिये, किन्तु उसके सामने या किसी अन्य के सामने चर्चा नहीं करनी चाहिये। दुष्ट होने पर भी उससे सम्मानजनक रूप से ही व्यवहार करना चाहिये।

सम्पर्क का माध्यम

नये स्थान पर जाने से पूर्व उस स्थान की अधिकतम जानकारी प्राप्त करने के बाद उस स्थान के व्यक्तियों से सम्पर्क का साधन भी दास-बोध में बताया गया है। समर्थ गुरु ने अपने साधकों को बताया कि नये स्थान पर हर घर में भिक्षा के लिये जाना चाहिये। भिक्षा के समय साधक कुछ समय रुके तथा घर के लोगों का निरीक्षण करे। साधक यह जानने का प्रयत्न करे, कि घर में कितने सदस्य हैं, घर का वातावरण कैसा हैं, समाज का काम करने लायक कौन उस घर में है। इसलिए भिक्षा (भोजन) कार्यसिद्धि का माध्यम बननी चाहिये। इससे सम्बन्धित ओवी इस प्रकार है-

कुग्रामें अथवा नगरें। पहावीं घरांचीं घरें।
भिक्षामिसें लहानथोर। परिक्षून सोडावीं॥